Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education

Vol. VIII, Issue No. XVI, Oct-2014, ISSN 2230-7540

REVIEW ARTICLE

हिन्दी नाटक एंव कविता का ऐतिहासिक विकास का अध्ययन

AN INTERNATIONALLY INDEXED PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL

www.ignited.in

Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. VIII, Issue No. XVI, October-2014, ISSN 2230-7540

हिन्दी नाटक एवं कविता का ऐतिहासिक विकास का अध्ययन

Mishra Anilkumar Bholanath

Research Scholar, Bhagwant University, Ajmer

----------X----------

परिचयः

विश्व की भाषाओं के साहित्य के अवलोकन से यह स्पष्ट हो जाता है कि इनमें गद्य की अपेक्षा पद्य का विकास पहले हुआ है। हिन्दी साहित्य भी इस तथ्य का अपवाद नहीं है। इसका प्रमुख कारण शायद यही था कि प्राचीन काल में छापेखाने नहीं थे। उस समय गद्य को कण्ठस्थ करना कठिन होता था, किन्त पद्य ही बन सकी, गद्य नहीं। इसीलिए प्राचीन काल में गद्य का विकास कम हो पाया। हिन्दी साहित्य के आदिकाल, मध्यकाल और रीतिकाल तक यद्यपि पद्य का प्राधानय रहा, परन्तु इन कालों में ब्रजभाषा और राजस्थानी भाषा में कुछ गद्य भी लिखा गया। गद्य का पूर्ण विकास आधुनिक काल में ही हुआ। आधुनिक हिन्दी गद्य का तात्पर्य खड़ी बोली गद्य से ही है।

साहित्य की समीक्षाः

हिन्दी में निबन्ध साहित्य का प्रारम्भ भारतेन्दु युग की पत्र–पत्रिकाओं से होता है। प्रायः तत्कालीन पत्र–पत्रिकाओं में उनके सम्पादक उस समय की सांस्कृतिक तथा राजनीतिक समस्याओं पर लेख लिखा करते थे। भारतेन्दु ने सर्वप्रथम कवि वचन सुधा और हरिशचन्द्र मैगजीन में साहित्यिक ढंग से निबन्ध लिखे। इसके बाद पं. बालकृष्ण भट्ट, पं. प्रतापनारायण मिश्र तथा बद्रीनारायण चौधरी प्रेमघन ने क्रमशः हिन्दी प्रदीप ब्राहमण तथा आनन्द कादम्बिनी का सम्पादन किया और इनमं निबन्ध लिखे। भारतेन्द के निबन्धों में पर्याप्त विवधता है। उन्होंने नाक, मुंह मरे को मारे शाह मदार, घूरे के लत्ता जैसे विषयों पर विनोद पूर्ण शैलीमें निबन्ध लिखे हैं इनकी भाषा स्वाभाविक, संजीव तथा व्यावाहिरिक है। भट्ट जी ने विनोदपूर्ण तथा गम्भीर शैलीमें निबन्ध लिखे हैं। इनकी भाषा स्वाभाविक, संजीव तथा स्वावहारिक है। भट्ट जी की भाषा मिश्र जी की अपेक्षा परिमार्जित है और उसमें ग्रामीणता का अभाव है। बालमुकुन्द गुप्त, प्रेमघन, अम्बिकादत्त व्यास, राधाचरण गोस्वामी इस यग के अन्य प्रसिद्ध निबन्ध लेखक हैं। खड़ी बोली गद्य का प्रारम्भिक काल होने के कारण इस काल के निबन्धों की भाषा में पर्याप्त विविधता है और उसमें क्षेत्रीयता अधिक है। इन निबन्धों में गम्भीरता की अपेक्षा मनोरंजन तथा चमत्कार–पदर्शन की अधिकता है और समाज–सुधार तथा देष–भक्ति की भावनाएं निबन्ध लेखन का उद्देष्य होता था।

आधुनिक हिन्दी के गद्य का विकासः

भारतेन्दु जी बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न साहित्यकार थे। उन्होंने हिन्दी गद्य को अभूतपूर्व समृद्धि प्रदान की। राजा षिवप्रसाद और राजा लक्ष्मण सिंह की अतिवादी भाषा–नीति को त्यागकर उन्होंने मध्यम मार्ग को अपनाया। संस्कृत के तत्सम शब्दों के साथ तद्भव, देषज तथा प्रचलित विदेषी शब्दों को अपनाकर एक सामान्य व्यावहारिक भाषा को जन्म दिया और हिन्दी गद्य को उन्होंने एक निष्चित स्वरूप प्रदान किया। देष–भक्ति एवं समाज–सुधार आदि विषयों को अपनाकर उन्होंने निबंध, नाटक, कहानी आदि अनेक विधाओं में श्रेष्ठ साहित्य की रचना की। 'हरिषचन्द्र मैगजीन' तथा 'कविवचन सुधा' आदि पत्रिकाओं के माध्यम से उन्होंने बहुत से लेखकों को स्वस्थ्य साहित्य सृजन का मार्ग दिखलाया। भारतेन्दु से प्रेरणा प्राप्त कर प्रतापनारायण मिश्र, बालकृष्ण भट्ट, देवकीनंदन खत्री, किषोरलाल गोस्वामी एवं बालमुकुन्द गुप्त आदि लेखकों ने निबंध, नाटक, कहानी, उपन्यास, आलोचना तथा जीवनी आदि विधाओं की उच्च कोटि की मौलिक रचनाएं देकर हिन्दी गद्य के विकास को तीव्र गति से बढ़ाया। इस प्रकार आधुनिक हिन्दी गद्य के विकास में भारतेन्दु का योगदान चिरस्मरणीय रहेगा।

आधुनिक हिन्दी गद्य के विकासः

यद्यपि भारतेन्दु काल में भारतेन्दु की प्रेरणा एवं प्रयास से हिन्दी गद्य की अनेक विधाओं में साहित्य सृजन का श्रीगणेश हो चुका था, किंतु एक उत्कृष्ट साहित्य के लिए जैसी परिष्कृत एवं परिमार्जित भाषा अपेक्षित होती है वैसी अब तक नहीं बन पायी थी, द्विवेदी जी ने इस कमी को दूर किया। सम्पादक के रूप में 'सरस्वती' पत्रिका के माध्यम से इन्होंने हिन्दी के साहित्यकारों को भाषा संबंधी अषुद्धियों से अवगत कराया और उन्हें शुद्ध, परिष्कृत एवं परिमार्जित भाषा लिखने की प्रेरणा दी। यही कारण है कि इस युग को द्विवेदी या भाषा–परिमार्जन काल कहा जाता है। द्विवेदी जी की प्रेरणा एवं मार्ग दर्शन से हिन्दी गद्य की विविध विधाओं में उच्च कोटि के साहित्य का निर्माण हुआ। श्यामसुंदर दास, पदम सिंह शर्मा, बालमुकुन्द गुप्त, चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी' सरदार पूर्ण सिंह इस युग के समर्थ लेखक थे। भाषा का परिष्कार तथा विविध विधाओं में उच्च कोटि के स्वस्थ साहित्य का निर्माण द्विवेदी जी की महत्वपूर्ण देन हैं।

हिन्दी नाटक के विकासः

छायावाद के प्रवर्त्तक महाकवि जयषंकर प्रसाद ने काव्य के क्षेत्र में जिस प्रकार क्रान्ति उपस्थित की, उसी प्रकार नाटक के क्षेत्र में भी प्रसाद जी ने नाटकों के स्वरूप को नवीनता प्रदान की। पाष्चात्य तथा भारतीय नाट्य–कलाओं का समन्वय करके प्रसाद जी ने एक नवीन शैली को जन्म दिया और उच्च कोटि के ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक नाटकों की रचना की। उनके नाटकों में संधर्ष की प्रधानता, शैलीकी नवीनता तथा मनोवैज्ञानिक

www.ignited.in

चरित्र–चित्रण तो मिलता ही है, अभिनय की दृष्टि से भी ये उच्च कोटि के हैं। पाष्चात्य नाटकों के प्रभाव से उन्होंने अपने नाटकों में युद्ध, हत्या, मरण, आदि के दृष्य वर्णित किये, जिनका भारतीय नाट्य–कला में निषेध था। प्रसाद जी ने अपने नाटकों में देष भक्ति, राष्ट्रीयता तथा जागरण का संदेश दिया है। हरिकृष्ण प्रेमी, उदयषंकर भट्ट, आचार्य चतुरसेन शास्त्री, लक्ष्मीनारायण मिश्र, गोविन्दबल्लभ पन्त तथा सेठ गोविन्ददास आदि इस काल के प्रसिद्ध नाटककार हैं। इस प्रकार हम निर्विवाद रूप से यह कह सकते हैं कि प्रसाद जी का युग हिन्दी नाटक के विकास का स्वर्ण युग था।

हिन्दी निबन्ध, आलोचना तथा इतिहास लेखनः

शुक्ल युग हिन्दी निबंध का उत्कर्ष काल था। द्विवेदी युग में विषय–विस्तार, भाषा में परिमार्जन तथा शैली में प्रौढ़ता पूर्ण रूप से प्रतिष्ठित हो चुकी थी, पर विचारों में गहन गंभीरता तथा वैज्ञानिक विष्लेशण की प्रवृत्ति अब तक नहीं आ पाई थी। शुक्ल जी ने इस अभाव की पूर्ति की। शुक्ल जी के निबंध क्षेत्र में पदार्पण करते ही उसमें नया जीवन आ गया। शुक्ल जी ने प्रायः साहित्यिक तथा मनोवैज्ञानिक ढंग के निबंध लिखे।

साहित्यिक ढंग के निबंधों में कुछ सैद्धान्तिक आलोचना से संबंधित हैं, जैसे–'साधारणीकरण और व्यक्तित्व वैचित्रयवाद' और कुछ व्यावहारिक आलोचना से संबंधित हैं, जैसे–'भारतेन्दु हरिषचन्द्र'। उनके मनोवैज्ञानिक निबंधों में लज्जा, ग्लानि, क्रोध, करूणा, लोभ और प्रीति, उत्साह आदि मनोविकारों पर लिखे हुए निबंध आते हैं। हिन्दी में इस प्रकार के निबंध लिखना शुक्ल जी की अपनी विषेषता है। गंभीर विवेचना से युक्त शुकल जी के इन निबंधों में उनके व्यक्तित्व की पूरी छाप हैं। वे साहित्यिकता तथा रसात्मकता से ओत–प्रोत हैं। निबंध की भॉति आलोचना को भी शुक्ल जी ने एक नयी दिशा तथा चरम उत्कर्ष प्रदान किया। उन्होंने अनेक आलोचनात्मक निबंधों तथा ग्रंथों की रचना की। उनसे पूर्ववर्ती समालोचनाओं में गुण–दोष विवेचनाओं की ही प्रधानता थी। शुक्ल जी ने आलाचेना का नया आदर्श उपस्थित किया। पाष्चात्य तथा भारतीय आलोचना पद्धतियों में समन्वय स्थापित कर शुक्ल जी ने सूर, तुलसी तथा जायसी पर उत्कृष्ट व्याख्यात्मक आलोचनाएं लिखीं।

हिन्दी में वैज्ञानिक ढंग की व्याख्यात्मक आलोचना का श्रीगणेष शुक्ल के द्वारा ही हुआ। निबंध और आलोचना के अतिरिक्त शुक्ल जी की तीसरी बड़ी देन हैं–'हिन्दी साहित्य का इतिहास'। यह हिन्दी साहित्य के विगत 900 वर्षों का प्रामाणिक लेखा–जोखा है। आज भी यह इस विषय के अन्य लेखकों का उपजीवी बना हुआ है। इस प्रकार निर्भ्रान्त रूप से हम कह सकते हैं कि निबन्ध, आलोचना तथा इतिहास लेखन के क्षेत्र में शुक्ल जी अग्रगण्य थे। इसके विकास में उनके योगदान की समता करने वाला कोई अन्य साहित्यकार नहीं है।

गद्य–काव्य (गद्य–गीत):

किसी कथानक, चरित्र या विचार की, कल्पना और अनुभूति के माध्यम से गद्य में सरस और रोचक अभिव्यक्ति गद्य–काव्य है। यह गद्य और काव्य के बीच की विधा है। इसमें गद्य के माध्यम से किसी भावपूर्ण विषय को काव्यात्मक शैली में लिखा जाता है। इसकी प्रमुख विषेषताएं निम्नलिखित हैं–

(1) इसमें गद्य के माध्यम से किसी भावपूर्ण विषय की काव्यात्मक अभिव्यक्ति होती है।

(2) इसमें लेखक अपने हृदय की संवेदना की अभिव्यक्ति इस प्रकार करता है कि पाठक उसे पढ़कर अलौंकिक आनंद की अनुभूति करता है।

(3) इसमें अनुभूति की तरलता, भावानुकूलता, संक्षिप्पता तथा सांकेतिकता मुख्य होती है।

(4) इसकी भाषा सरल, अलंकृत और संगीतात्मक होती है तथा शैली चमत्कार और कवित्व से परिपूर्ण होती है।

ग्रन्थ सूची:

(अ) संस्कृत

1. काव्य मीमांसा – राजशेखर –चौखम्भा विद्याभवन, प्रथम सं. 1964
2. ध्वन्यालोक – आनन्दवर्द्धन – वाराणसी, 2019 वि.

(आ) अंग्रेजी

1. द मीनिंग ऑफ कान्टेपटेरी रियलिज्म – जॉर्ज लुकाच

(इ) हिन्दी

1. आखिर रचना क्यों – मुक्तिबोध – राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
2. आत्मनेपद –अज्ञेय – भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, काशी, प्रथम सं. 1960
3. काव्य परम्परा और नई कविता की भूमिका – कमल कुमार –प्रेम प्रकाशन मन्दिर, दिल्ली, प्रथम सं. 1979
4. कविता का पूरा दृश्य – माधव हाड़ा – वाग्देवी प्रकाशन, बीकानेर प्रथम सं. 1992
5. कविता के नये प्रतिमान – डॉ. नामवर सिंह –राजकमल प्रकाशन, दिल्ली प्र.सं. 19
6. काव्य शिल्प के आयाम – सुलेख शर्मा – आदर्श साहित्य प्रकाशन, दिल्ली, प्र.सं. 1971
7. गद्य–पद्य – सुमित्रानन्दन पन्त – इलाहाबाद, प्रथम सं. 1985
8. द्वितीय तार सप्तक – सं. अज्ञेय – ज्ञानपीठ प्रकाशन, दिल्ल, प्रथम सं. 1970
9. नई कविता : सीमाएँ ओर सम्भावनाएँ– गिरिजाकुमार माथुर – नेशलन पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, प्रथम सं. 1973
10. पल्लव – सुमित्रानन्दन पन्त – राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम सं. 1973
11. भाषा और संवेदना –रामस्वरूप चतुर्वेदी – ज्ञानपीठ प्रकाशन, काशी, प्रथम सं. 1964

12. समकालीन आलोचना – सं. डॉ. वीरेन्द्र सिंह – पंचशील प्रकाशन, जयपुर, प्रथम सं. 1989

13. समकालीन कविता – सं. डॉ. वीरेन्द्र सिंह – पंचशील प्रकाशन, जयपुर, प्रथम सं. 1987

14. साठोत्तरी हिन्दी कविता : परिवर्तित दिशाएँ – विजय कुमार – प्रकाशन संस्थान, दिल्ली, प्रथम सं. 1986

15. साहित्य का स्वरूप – डॉ. ब्रजलाल गोस्वामी – साहित्य संगम, लुधियाना, प्रथम सं. 1967

16. समीक्षा के नये प्रतिमान – डॉ. अशोक द्विवेदी – अनिल प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम सं. 1992

19. ध्वन्यालोक हिन्दी टीका – रामसागर त्रिपाठी– भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, काशी

20. हिन्दी काव्य शास्त्र में कविता का स्वरूप विकास – डॉ. पुष्पा बंसल,

21. समसामयिक कविता में विसंगति – जगदीश नन्दिगी

22. काव्य के रूप – डॉ. गुलाब राय

(ग) पत्र –पत्रिकाएँ

1. नई कविता – अंक 2

(ध) संदर्भ कोश

1. हिन्दी मानक कोष – रामचन्द्र वर्मा

2. विष्व हिन्दी कोष – डॉ. रमाषंकर शुक्ल

3. हिन्दी शब्द सागर – प्रचारिणी सभा –वाराणसी

4. ऑक्सफोर्ड इंग्लिष डिक्षनरी,संस्करण–1973